अध्याय 2

पश्चिम में उपनिषद् और गीता

2.1 पश्चिम में उपनिषद

भारतीय दर्शन जगत् में प्रस्थानत्रयी के नाम से प्रसिद्ध 'उपनिषद्' का आदिम ग्रन्थ के रूप में मान्यता प्राप्त है तथा सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ के रूप में समादृत है। वेदान्त दर्शन के तीन भागों श्रुति, स्मृति तथा न्याय में से श्रुति के अन्तर्गत उपनिषदों की गणना की जाती है। उपनिषद् साक्षात् कामधेनु है तथा भगवद्गीता उपनिषद् रूपी कामधेनु का अमृतमय पथ्य है। गीता में लिखा है कि **''सर्वोपनिषदो गावो दोग्धा गोपालनन्दनः''** अर्थात् समस्त उपनिषद् गौ स्वरूप हैं तथा ग्वालो के प्रिय श्रीकृष्ण उनका दोहन करने वाले हैं। अध्यात्म प्रधान भारतीय संस्कृति में आध्यात्मिक ज्ञान के प्रतिपादन का श्रेय वेदान्त अर्थात् उपनिषदों को ही प्राप्त है। मानव जीवन का चरम लक्ष्य पारमार्थिक सत्य का ज्ञान प्राप्त करना है।[1]

उपनिषद् एतदर्थ प्रामाणिक ग्रन्थ माने जाते हैं तथा इसके अन्तर्गत उपनिषद् सर्वप्राचीन ग्रन्थ के रूप में मान्यता प्राप्त है। इनको वेदों का अन्तिम भाग माना जाता है। आचार्य सदानन्द जी ने वेदान्तसार में लिखा है कि **'वेदान्तो नाम उपनिषत्प्रमाणं तदुपाकारिणि शारीरिक सूत्रादि'** अर्थात् वेदान्त शब्द उपनिषद् के रूप में प्रामाणिक माना जाता है तथा इसकी व्याख्या शारीरिक सूत्रादि में की गई है। उपनिषद् वस्तुतः भारतीय दर्शन के मूलाधार है।

---

1. संस्कृत साहित्य का इतिहास पृ० 74

Scanned with CamScanner

'उप' तथा 'नि' इन दो उपसर्गों के बाद सद् धातु से क्विप् प्रत्यय लगाकर उपनिषद् शब्द निष्पन्न होता है। साधारणतः इसका अर्थ होता है गुरु के समीप (उप) बैठकर (निषध) प्राप्त किया गया ज्ञान है। फिर भी सद् धातु के तीन अर्थों से आध्यात्मिक उत्कर्ष वाले निर्वचन किये गये हैं। सद् धातु के तीन अर्थ हैं— विशरण (नाश) गति (ज्ञान या प्राप्ति) तथा अवसादन (शिथिल करना)। इसीलिए शंकराचार्य ने कहा है कि 'उपनिषाधयति सर्वानर्थकरं संसारं विनाशयति, संसारकारणभूतामविद्यां च शिथिलयति ब्रह्म च गमयति' अर्थात् सभी अनर्थों को उत्पन्न करने वाले संसार (जीव का बार-बार जन्म-मरण होना) का यह विनाश करती है, संसार के हेतु स्वरूप अविद्या को शिथिल करती है और ब्रह्म की प्राप्ति (अवगति-ज्ञान) कराती है।[2]

उपनिषदों का अध्ययन एकान्त में गुरु के प्रसाद से होता रहा है अतः उन्हें 'रहस्यविद्या' भी कहते हैं। उनमें मुख्य रूप से ब्रह्म, सृष्टि, जीव, आत्मा, प्राण, पुनर्जन्म, कर्म तथा नैतिकता का विवेचन है। उनमें उपदेश की अनेक विधियों का प्रयोग मिलता है।

शंकराचार्य ने भाष्य लिखा था। उनके विषय में यह प्रसिद्ध श्लोक है—

ईश-केन-कठ-प्रश्न-मुण्ड-माण्ड्क्य-तित्तिरिः।
ऐतरेयं च छान्दोग्यं वृहदारण्यकं तथा।।

(1) ईशोपनिषद् (2) केनोपनिषद् (3) कठोपनिषद् (4) प्रश्नोपनिषद् (5) मुण्डकोपनिषद् (6) माण्डूक्योपनिषद् (7) तैत्तिरीयोपनिषद् (8) ऐतरेयोपनिषद् (9) छान्दोग्योपनिषद् (10) वृहदारण्यकोपनिषद्।

(क) दाराशिकोह के द्वारा उपनिषदों का फारसी अनुवाद

उपनिषदों के माहात्म्य का प्रतिपादन इस तथ्य से सहज ही लगाया

2. संस्कृत साहित्य का इतिहास पृ० 75

जा सकता है कि इनका अनुवाद देश-विदेश की विभिन्न भाषाओं में किया गया। मौखिक धरातल पर उपनिषदों के विकास का निरीक्षण करते समय सबसे पहला स्थान उनके दार्शनिक अध्ययन का है और उसके बाद हमारे ध्यान को आकृष्ट करने वाली कृतियाँ उसके अनुवाद है।

मुगलों के शासन काल में भारतीय संस्कृति को एक अन्य प्रबल विश्व-संस्कृति के आमने-सामने खड़ा होना पड़ा था। हमें यह ज्ञात है कि बादशाह अकबर के कार्यकाल में 'अल्लोपनिषद्' आदि की भी रचना हुई थी। उपनिषदों की दृष्टि से परखने पर इन प्रयत्नों में सत्य का ह्रास ही प्रतिबिम्बित होता है फिर भी सांस्कृतिक भिन्नता और मतभेदों के उस पार दृष्टिपात करने के लिए उत्सुक, विश्व के इने गिने बादशाहों में अकबर भी शामिल है। अकबर की सहिष्णुता की नीति और विभिन्न धर्मों के विद्वानों के साथ उनके विचार विनिमय का लक्ष्य राजनीतिक था। वे भारत जहाँ की अधिकांश आबादी हिन्दू थी वहाँ पर अपने सम्राज्य को मजबूत बनाना चाहते थे। अकबर के बाद भी एकता की यह भावना मुगल राजवंश को प्रेरित करती रही है। इसी कारण इतिहास में पहली बार एक विजातीय भाषा में उपनिषदों का अनुवाद हुआ था। यह अपूर्व घटना सत्रहवीं शताब्दी के मध्य में हुई थी। इसे एक महायज्ञ के रूप में मान्यता मिलने योग्य यह प्रयास दाराशिकोह के नेतृत्व में सम्पन्न हुई। दाराशिकोह की तुलना उनके परदादा अकबर से की जाती है। अकबर ने भी अन्य धर्मों के विद्वानों को संरक्षण दिया और विभिन्न धर्मों का तुलनात्मक अध्ययन किया परन्तु दोनों के बीच महत्त्वपूर्ण अन्तर थे।[3]

दाराशिकोह (1615-1659) बादगाह शाहजहाँ और बेगम मुमताज महल के सबसे बड़े पुत्र थे। वे बली अहद (युवराज) भी थे और शाहजहाँ के बाद गद्दी पर उन्हें ही बैठना था परन्तु उन्हें उनके भाई औरगंजेब ने युद्ध में पराजित कर दिया और औरगंजेब भारत के बादशाह बने। यद्यपि दाराशिकोह एक पराजित राजकुमार थे परन्तु वे उद्भट विद्वान भी थे और

3. www.vakgujarat.com/ उपनिषदों के फारसी अनुवाद, 'दाराशिकोह' नवीनपन्त, प्रतीकालिंग पब्लिशर्स इण्डिया।

Scanned with CamScanner

उनका जीवन कई शानदार उपलब्धियों से भरा हुआ था।[४] उन्होंने हिन्दू धर्म का गहराई से अध्ययन किया और उपनिषदों का फारसी भाषा में अनुवाद भी किया। मुगल राजकुमार दाराशिकोह ने 1656-57 ई० में प्राय: 52 उपनिषदों का फारसी में अनुवाद कराया था। जिसमें से 3 ऋग्वेद से, 12 यजुर्वेद से, 1 सामवेद से तथा 36 अथर्ववेद से उपनिषदे थी। उसने अपने ग्रन्थ का नाम 'सिर्रे अकबर' रखा। इस नाम को रखते हुए उसने तीन बातों की ओर सङ्केत किया। 'सिर्रे अकबर' का अर्थ है महान् रहस्य। इसमें इस सङ्केत उपनिषद् के अर्थ की ओर है। दूसरा संङ्केत अबकर महान के अनुवाद सम्बन्धी कोशिशों की ओर है तीसरे स्तर पर दारा ने 'सिर्रे अकबर' की व्याख्या करते हुए लिखा है "आयते तौहीद की सिर्रे पोशदानी अस्त" अर्थात् अद्वैत के ऐसे रहस्य का पद्य जिन्हें गुप्त रखना जरूरी है।[५] दारा शिकोह मानते है कि कुरान में जिस गुप्त का वर्णन वह उपनिषद् ही है। इसलिए उसने उपनिषदों के अनुवाद का निश्चय किया। दाराशिकोह द्वारा उपनिषदों के अनुवाद का मुख्य प्रयोजन एकेश्वरवाद की खोज थी जिसे वह कुरान के अन्यत्र खोज रहा था इसीलिए वह अपनी भूमिका में भी लिखता है कि वह अनुवाद कार्य अपने बच्चों, स्त्रियों और सत्यान्वेषी लोगों के आध्यात्मिक लाभ के लिए कर रहा है। इसीलिए उसने अनेक धर्मग्रन्थों को पढ़ा तथा सन्त फकीरों और ज्ञानियों से विचारविमर्श किया और इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि एकेश्वरवाद की सबसे प्राचीन व्याख्या उपनिषदों में है। उसके अनुवाद की पाण्डुलिपि 1775 में प्रसिद्धि फ्रांसीसी प्रात्यविद्याविद् अंकेतिल डुपेरों को मिली। डुपेरों ने उपनिषदों के दारा के फारसी अनुवाद का लैटिन और फैञ्च में अनुवाद किया। उसका लैटिन 1801 और 1802 में छपा। इसी फ्रैञ्च अनुवाद के प्रकाशन के बाद यूरोप के विद्वानों और दार्शनिकों को उपनिषदों का ज्ञान प्राप्त हुआ।[६] 'सिर्रे अकबर का जर्मन

4. w.w.w. vskgujarat.com/ उपनिषदों के फारसी अनुवाद & 'दाराशिकोह' नवीनपन्त, हार्परकालिंग पब्लिशर्स इण्डिया।
5. वही।
6. वही।

अनुवाद 1882 में प्रकाशित हुआ।' दारा शिकोह ने उपनिषदों का अनुवाद करते समय शङ्कराचार्य के भाष्य को आधार बनाया है। द्वारा ने 'सिर्रे अकबर' की भूमिका में लिखा है कि वह अनुवाद का कार्य अपने अपने बच्चों, मित्रों और सत्यान्वेषी लोगों के अध्यात्मिक लाभ के लिए कर रहा है। दारा ने उपनिषदों का फ़ारसी में जो अनुवाद किया था, उसके लैटिन और फिर जर्मन अनुवाद के माध्यम से ही उपनिषदों का ज्ञान यूरोप पहुँचा। तब जाकर यूरोप संस्कृत के ज्ञान सागर से परिचित हुआ। इसे फ्रंच यात्री बर्नियर फ्रांस ले गया था जहाँ उसका लातिन-भाषा में अनुवाद हुआ। वह 'औपनिखत' के नाम से 1809 ई० में प्रकाशित हुआ। यद्यपि यह अनुवाद अपूर्ण और अव्यवस्थित था किन्तु उसे पढ़कर जर्मन दार्शनिक शाँपेनहावर इतना अभिभूत हो गया था कि उपनिषदों को उसने विश्व की दार्शनिक विचारधारा का मार्गदर्शक का मार्गदर्शक तो कहा ही, व्यक्तिगत प्रभाव के रूप में स्वीकार किया कि सम्पूर्ण विश्व में उपनिषदों के समान जीवन को ऊँचा उठाने वाला कोई दूसरा अध्ययन का विषय नहीं है। यह मेरे जीवन के लिए सान्त्वना है तो मृत्यु के अनन्तर भी सान्त्वना भी होगी। (In the whole world there is no study so elevating as that of Upanisads at has been the solace of my life and will be the solace of my death) पाश्चात्य जगत में पॉल डिउसन (Deussen) तथा आर० ह्यूम ने उपनिषदों के अनुवाद किये एवम उनके सिद्धान्तों पर प्रकाश डाला।

उपनिषदों और भगवद्गीता के अतिरिक्त दाराशिकोह ने **तालमुद** (यहूदी धर्म ग्रन्थ) और **न्यू टेस्टामेन्ट** (ईसाई बाइबिल का दूसरा हिस्सा) का भी अनुवाद किया। उन्होंने अपना जीवन वेदांतिक और ईस्लामिक अध्यात्म में सामंजस्य बैठाने को समर्पित कर दिया। वे मानते थे कि कुरान में अदृश्य किताब **'किताब अलमकनन'** वास्तव में उपनिषद् थे। उन्होंने संस्कृत भाषी और उपनिषद्, गीता, योगवशिष्ठ का फारसी में अनुवाद किया।[४]

4. w.w.w. vskgujarat.com/ उपनिषदों के फारसी अनुवाद & 'दाराशिकोह' नवीनपन्त, हार्परकालिंग पब्लिशर्स इण्डिया।
5. वही।

Scanned with CamScanner

दाराशिकोह कबीर के अनुयायी बाबा लाल दास वैरागी के भी काफी नजदीक थे तथा वे फॉदर बुजी से भी आध्यात्मिक मामलों में ज्ञान प्राप्त करते थे। हिन्दू धर्म ग्रन्थों को बेहतर ढंग से समझने के लिए उन्होंने बनारस के पंडितो और सन्यासियों के साथ भी काफी वक्त गुजारा। इनकी सबसे प्रसिद्ध रचनाओं में से एक है **'मजमा-उल-बहरीन'** अर्थात् (दो महासागरों का मिलन है।)[9] इसमें उन्होंने ईस्लाम और हिन्दू धर्म के बीच की समानताओं को ढूढ़ने की कोशिश की है। वे लिखते है कि **''मजमा-उल-बहरीन''** सत्य जानने वाले दो समूहों के सत्य और ज्ञान का संकलन है। अपनी इस पुस्तक में दाराशिकोह ने उन बिदुंओं का विस्तार से विवरण किया है जहाँ ये एकदम अलग-अलग दिखने वाले धर्म एक-दूसरे से मिलते हैं। वे इस तथ्य से अच्छी तरह से वाकिफ थे कि सत्य-बहुआयामी होता है और वे धार्मिक बहुदेववाद के जबरदस्त पैरोकार थे। उन्होंने अपने अध्ययन से यह साबित किया कि हिन्दूधर्म और ईस्लाम में कई चीजे समान है और वे एक दूसरे के प्रेरक है। उन्होंने भारतीय ईस्लामिक परम्परा को मजबूती दी और उन्हें संकीर्णता से मुक्त किया और भारतीय परम्परा का हिस्सा बनाया। वे यह नहीं मानते थे कि कोई धर्म किसी दूसरे धर्म से श्रेष्ठ है। धर्मों की उनकी व्याख्या उदारवादी और समावेशी थी। उन्होंने लिखा है कि– **'अगर में जानता हूँ कि एक हिन्दू पाप में डूबा हुआ है परन्तु एकेश्वर वाद की बात कहता है तो में उसके पास जाऊँगा, उसे सुनूँगा और उसके प्रति आभारी रहूँगा।**[10] इस सन्दर्भ में 'मजमा उल बहरीन' एक महत्त्वपूर्ण पुस्तक है क्योंकि वह दोनों धर्मों की समानताओं पर केन्द्रित है और कहती है कि सभी धर्म हमें सत्य की राह पर ले जाते हैं। यह पुस्तक 22 खंडों में विभाजित है और इसमें प्रकृति के मूल तत्त्वों से लेकर हमारी ज्ञानेन्द्रियों, चेतना आत्मा और धार्मिक परम्पराओं की विशद विवेचना है।[11] इस पुस्तक का जो सबसे महत्त्वपूर्ण हिस्सा है वह है इसमें दोनों धर्मों के ईश्वर के गुणों

9. w.w.w. vskgujarat.com/ उपनिषदों के फारसी अनुवाद & 'दाराशिकोह' नवीनपन्त, हार्परकालिंग पब्लिशर्स इण्डिया।
10. वही।
11. वही।

का वर्णन और उसकी तुलना है। ईस्लाम के अनुसार ईश्वर के दो गुण **जमाल** या **सुन्दरता** और **जलाल** या महिमा अथवा वैभव। हिन्दू धर्म में ईश्वर के तीन रूप बताए गए है– ब्रह्मा, विष्णु और महेश जो क्रमशः सृष्टि, अस्तित्व और विनाश के प्रतीक है। यह ईस्लाम में वर्णित, जिब्राएल, मीकाइल और इस्राफील से मिलते जुलते हैं। जिब्राएल सृष्टि के फरिस्ते हैं, मीकाइल अस्तित्व के और इस्राफील संहार के फरिश्ते हैं। इससे यह पता चलता है कि दोनों धर्मों में कुछ मूलभूत समानताएँ है।[12]

तौहीद या एक ईश्वर की अवधारणा

तौहीद या एक ईश्वर की अवधारणा ने दाराशिकोह को बहुत आर्कषित किया। उन्हें बहुवाद में गहरी निष्ठा थी परन्तु वे फिर भी यह मानते थे कि सभी रास्ते हमें एक ही ईश्वर की ओर ले जाते हैं। उन्होंने कहा था कि **''तौहीद का रहस्य यह है कि हे मेरे मित्र, इसे समझो कही पर कुछ भी ऐसा नहीं है जो ईश्वर न हो। जो कुछ तुम उससे अलग देखते या जानते हो उसका नाम भले ही कुछ और हो परन्तु वास्तव में वह ईश्वर ही है।''**[13]

तौहीद या ईश्वर की एकात्मकता की खोज ने उन्हें अनेक धर्मों के ग्रन्थों का अध्ययन करने के लिए प्रेरित किया। पवित्र कुरान में भी कई बाते ऐसी है जिनकी व्याख्या करना मुश्किल है। उन्होंने अपने मन में उपजे प्रश्नों के उत्तर उन विभिन्न धर्मों के ग्रन्थों में ढूढ़ने की कोशिश की जो आध्यात्मिक तौर पर एकेश्वरवाद में विश्वास रखते हैं। परन्तु उन्हें इन प्रश्नों के उत्तर खोजने के लिए हिन्दू धर्म ग्रन्थों का सहारा लिया और 52 उपनिषदों का फारसी भाषा में अनुवाद किया। उपनिषदों में उनके मन में घुमड़ रही कई जिज्ञासाओं के उत्तर मिले और उन्होंने लिखा है कि उपनिषद् 'पहली दिव्य पुस्तक' और एकेश्वरवाद के मूल स्रोत है। उन्होंने यह भी लिखा है कि ईश्वरीय वह **'किताब- ए-मन्तूम'** (गुप्त पुस्तक) है जिसका जिक्र कुरान

12. w.w.w. vskgujarat.com/ उपनिषदों के फारसी अनुवाद & 'दाराशिकोह' नवीनपन्त, हार्परकालिंग पब्लिशर्स इण्डिया।
13. वही

Scanned with CamScanner

में हैं। कुरान कहती है- **"निसन्देह एक छपी हुई किताब है इसकी वास्तविकता को वे ही लोग जान पाते हैं जो पवित्र होते है। इसका उतरना सारे जहानों के रब्ब की ओर से है।"** (कुरान, अध्याय 56 आयत 78-81)[14]

दाराशिकोह के दरवार में हिन्दू और मुसलमान दोनों धर्मों के विद्वानों कलाकारों को सम्मानपूर्ण स्थान दिया जाता था। दारा के प्रभाव के कारण शाहजहाँ कट्टरपन्थी रवैया नहीं अपनाता था। हिन्दू और मुसलमान दोनों उसका गुणगान करते नहीं थकते थे। मुल्ला उसे महदी (मार्गदर्शक) कहते थे। पण्डित उसकी तुलना जगदीश्वर से करते थे। पण्डित राज जगन्नाथ ने उनकी इस शब्दों में प्रशंसा की है–

दिल्लीश्वरों या जगदीश्वरों वा मनोरथान पूरयितु समर्थः।
अन्यैनृपालैः परदीयमानः शाकाय या स्यात्तलवणाय वा स्यात।"[१५]

दाराशिकोह ने कभी ईस्लाम को नहीं त्यागा। वह धर्मनिष्ठ मुसलमान शासक थे। परन्तु उन्होंने अन्य धर्मों के ग्रन्थों का उपयोग ईस्लाम की अपनी समझ को बेहतर बनाने के लिए किया। उन्होंने हिन्दू धर्म का अध्ययन इसलिए किया क्योंकि उन्हें ऐसा लगा कि दोनों धर्मों के बीच समानताएँ और एकरूपता है। उनका कहना था कि भले ही दोनों धर्मों के कर्मकाण्ड और पूजा पद्धतियाँ अलग हो परन्तु उनकी आत्मा एक ही है। इस दृष्टि से वे विभिन्न धर्मों के बीच समन्वय और एकता के पक्षधर थे और भारत की मिली जुली संस्कृति में उनका अमूल्य योगदान था।[16] इसलिए उन्होंने उपनिषदों का जो अनुवाद किया उसका शीर्षक था **'सिर र अकबर'** (महान रहस्य) है। यह पुस्तक द्वारा शिकोह की उदार शोध का परिचायक है। वे अपने प्रश्नों का उत्तर ढूढ़ने और सत्य की तलाश में अन्य धर्मों के ग्रन्थों का सहारा लेने से भी तनिक भी हिचकिताते नहीं थे।[17]

14. w.w.w. vskgujarat.com/ उपनिषदों के फारसी अनुवाद & 'दाराशिकोह' नवीनपन्त, हार्परकालिंग पब्लिशर्स इण्डिया।
15. वही।
16. वही।
17. वही।

(ख) दाराशिकोह पर सूफीवाद का प्रभाव

अब प्रश्न यह उठता है कि सूफीवाद क्या है? संत या सूफी का दुनियादारी से दूर विरक्त भाव से सामाजिक सेवा करना ही उनका ध्येय होता था। आचरण, सद्विचार, त्याग और साधना जैसे गुण अपनाते थे। इस कला से सभी सम्प्रदाय के लोग आपस में मित्रता भाव रखने लगे। अपवाद स्वरूप अपने घर में ही विवाद पैदा हो जाना कोई बड़ी बात नहीं है।[१८]

9वीं शताब्दी में सूफीवाद ने इस्लामिक अध्यात्म को समझाया है। यह इस्लाम प्यार का दिल है। आज भी जीवित, सम्पन्न और व्यापक रूप से प्रभावशाली है। यह कट्टरपंथियों का ईस्लाम नहीं है ब्लकि काफी इसके विपरीत है। प्रारम्भिक दिनों में तपस्या मुसलमानों के विचारों में उपवास, प्रार्थना और एकजुटता में ध्यान का अभ्यास है। जिसको सबसे पहले भिक्षुओं और नन ने किया। क्योंकि जो लोग ऊन (अरबी में पीड़ित) से बने मोटे कपड़े पहनते थे, उन लोगों को 'सूफी' कहा जाता था। इस प्रकार सूफीवाद जल्द ही एक रहस्यमय पथ का नाम बन गया, जिसके द्वारा लोग ईश्वर के प्रत्यक्ष अनुभव के द्वारा ईश्वरीय प्रेम और ज्ञान की सच्चाई की खोज करते हैं। कहा जाता है कि सूफी को 'मुरूकबा' के माध्यम से 'आध्यात्मिक हृदय' की अनमोल देखभाल करने के लिए ध्यान के समान अभ्यास के कहा जाता है। समर्पित सूफी लगातार इस्लामिक पवित्र पुस्तक कुरान के शब्दों पर ध्यान केन्द्रित करते थे। बचपन से ही दाराशिकोह सेना और पूर्वों से ज्यादा दर्शनशास्त्र और रहस्यवाद में रूचि रखते थे और यही कारण है कि उन्हें फिलासफर प्रिंस (दार्शनिक राजकुमार) भी कहा जाता है। इनकी आध्यात्मिक भावना की शुरूआत महान सूफी संतों के सम्पर्क में आने से हुई थी। वे मीयाँ मीर और मुल्लाशाह बदाक्षी के बहुत नजदीक थे। इन्होंने सूफीवाद का अध्ययन किया और कादरी सूफी सिलसिला के शिष्य बने।[१९] दाराशिकोह सूफीवाद से इतने गहरे रूप से प्रभावित थे कि

18. www.vskgujarat.com/ उपनिषदों के फारसी अनुवाद & 'दाराशिकोह' नवीनपन्त, हार्परकालिंग पब्लिशर्स इण्डिया।

Scanned with CamScanner

इन्होंने सूफीवाद पर छः पुस्तके लिखी। अपनी पहली पुस्तक, जिसे इन्होंने तब लिखा था जब वे मात्र 25 वर्ष के थे जिसमें उन्होंने पेंगम्बर मोहम्मद और उनकी पत्नियों सहित 41 इस्लामिक संतों के जीवन का वर्णन किया।[20] 'सफीनात अल औलिया' और 'सकीनात अल औलिया' उसकी सूफी संतों के जीवन चरित्र पर लिखी हुई पुस्तके हैं। 'रिसाला ए हकनुमा' (1646) और 'तारीकात ए हकीकत' में सूफीवाद का दार्शनिक विवेचन है। 'अक्सीर ए आजम' नामक उसके कविता संग्रह से उसकी सर्वेश्वरवादी प्रवृत्ति का बोध होता है। उसके अतिरिक्त 'हसनात अल आरिफीन' और 'मुकालम ए बाबालाल ओ दाराशिकोह' में धर्म और वैराग्य का विवेचन हुआ है। वे केवल सूफी परम्परा के संतों के ही सम्पर्क में ही नहीं थे, ब्लकि दारा ने लिखा है कि सूफियों के सच्चे धर्म का पता लगाने और रहस्यवादी प्रेरणा प्राप्त करने के बाद मैंने भारतीय एकेश्वरवादियों के सिद्धान्त जानने चाहे। चरमसत्य को जानने और रहस्यवादियों के सच्चे धर्म के रहस्यों एवं सूक्ष्मता का निश्चित रूप से पता लगाने और यह महान उपहार प्रदान किये जाने के बाद मेरी प्रबल इच्छा भारतीय एकेश्वरवादियों के धर्मों के आचार्य विद्वानों से है जिन्होंने जबदस्त साधन से ईश्वर, प्रज्ञा, बुद्धि और धार्मिक अन्तर्दृष्टि प्राप्त कर ली थी, वहस करने की हुई। वहस के बाद मुझे उनकी और अपनी सत्य की खोज करने और उसे समझने में कोई अन्तर नहीं लगा। वे अन्य मतों के सन्तों के सम्पर्क में भी थे। द्वारा तपस्या के स्थान पर नैतिक त्याग को आवश्यक समझता था। उसकी राय में सांसारिकता भगवान को याद न करना है। पर गृहस्थी करना सांसारिकता नहीं है। दारा स्पष्ट शब्दों में कहता है कि मेरा रास्ता ईश्वर की कृपा प्राप्त करना है, कष्ट सहन करना नहीं है। वह बिना त्याग अथवा तपश्चर्या किए ईश्वर की ओर आकृष्ट हुआ।[२१]

उपनिषद और सूफीवाद

(१) गुरु-शिष्य परम्परा : उपनिषद् का शाब्दिक अर्थ है 'गुरु के

20. w.w.w. vskgujarat.com/ उपनिषदों के फारसी अनुवाद & 'दाराशिकोह' नवीनपन्त, हार्परकालिंग पब्लिशर्स इण्डिया।

21. वही

समीप बैठकर ज्ञान की प्राप्ति करना।' अतः उपनिषद् स्वयं ही गुरु-शिष्य परम्परा का द्योतक है। इस परम्परा में गुरु-शिष्य आश्रम में रहकर शास्त्रों का अध्ययन-अध्यापन करते थे। सूफीवाद में भी गुरु-शिष्य परम्परा का वर्णन है। गुरु 'पीर' तथा शिष्य 'मुरीद' कहलाता था। वे दोनों 'खानकाह' अर्थात् आश्रम में रहते थे।

(२) योग : योग विद्या का उपनिषदों में बहुत अधिक वर्णन प्राप्त होता है। १०८ उपनिषदों में से २१ से अधिक उपनिषदों में केवल योग पर ही चर्चा है। इन सभी उपनिषदों में चित्त, नाड़ी, इन्द्रियाँ, यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि आदि का विस्तृत वर्णन मिलता है। सूफियों के संत संगठन और उनके कुछ आचारों जैसे तप, उपवास, प्राणायाम आदि के मूल में यौगिक प्रभाव देखे जाते हैं। प्रसिद्ध सूफी संत निजामुद्दीन औलिया यौगिक प्राणायाम भी करते थे। योगी लोग इन्हें सिद्ध-पुरुष कहते थे। क्योंकि वह इस कार्य में अत्यधिक ही पारंगत थे। इस काल में एक यौगिक पुस्तक 'अमृत कुण्ड' का अनुवाद संस्कृत से फारसी भाषा में हो चुकां था।[२२]

(३) समन्यवाद : उदारवादी विचारधाराओं से प्रभावित होकर सूफी सम्प्रदाय हुआ था। सूफीवाद धार्मिक सहिष्णुता और एकता पर बल देता है। इस मत की पुष्टि सूफी संत दाराशिकोह के द्वारा फारसी भाषा में लिखी गई 'मज्म-उल-बहरैन' नामक पुस्तक करती है। इस पुस्तक की बुनियादी अवधारणा यह है कि इस्लाम और हिन्दू धर्म दो समुद्र है जिनके बीच सङ्गम सम्भव है क्योंकि उनके बीच बुनियादी एकता है। उपनिषद् भी धर्म जाति से ऊपर उठकर शरीर नहीं अपितु आत्मा की बात करते हैं। संसार के सभी जीव में ब्रह्म का ही अंश है। अर्थात् जब सभी लोगों में ब्रह्म का ही अंश विद्यमान है तो जातिगत-धर्मगत भेदभाव का प्रश्न ही नहीं उठता है।[२३]

22. w.w.w. vskgujarat.com/ उपनिषदों के फारसी अनुवाद & 'दाराशिकोह' नवीनपन्त, हार्परकालिंग पब्लिशर्स इण्डिया।

23. वही

Scanned with CamScanner

(४) बाह्य-आडम्बर का विरोधी : सूफीवाद इस्लाम धर्म में आए कर्मकाण्ड की पाखण्डता को समाप्त करने की दिशा में पल्लवित हुआ। इस्लामी साम्राज्य की स्थापना के बाद धन-सम्पत्ति का जैसा कुरूप प्रदर्शन किया जा रहा था और नैतिक मूल्यों में गिरावट आ गई थी। इस्लाम धर्म में बड़े हुए कट्टरता और निरंकुशता को सूफीवाद ने कम कर दिया। उपनिषद् भी हिन्दु धर्म में यज्ञादि कर्मकाण्ड से ऊपर उठकर ज्ञान के द्वारा मोक्ष प्राप्ति की बात करते थे। खर्चीले यज्ञादि का बहिष्कार किया गया। सूफीवाद तथा उपनिषद् दोनों में ईश्वर और भक्त के मध्य पण्डित व मौलवी जैसे मध्यस्थ का बहिष्कार किया गया।[२४]

(5) एकेश्वरवाद

उपनिषदों तथा सूफीवाद दोनों में एकेश्वरवाद स्पष्ट रूप से देखा जाता है। इसकी पुष्टि इस प्रसङ्ग से की जाती है कि सूफी संत दाराशिकोह की ज्ञान साधना का उद्देश्य एकेश्वरवाद की खोज था जिसे वह कुरान के अलावा अन्यत्र खोज रहा था। इसलिए उसने अनेक धर्मग्रन्थों को पढ़ा तथा सन्तों, फकीरों और ज्ञानियों से विचार विमर्श किया और उस सबके बाद इस निष्कर्ष पर पहूँचा कि एकेश्वरवाद की सबसे प्राचीन व्याख्या उपनिषदों में ही है। इसलिए उसने उपनिषदों का अनुवाद किया था। सूफी मतावलम्बियों का विश्वास था कि ईश्वर एक है, खुदा और बन्दे में कोई अन्तर नहीं है। यह विचार शङ्कराचार्य के अद्वैतवाद से प्रभावित प्रतीत होता है इस मत के अनुसार जीव और ब्रह्म भिन्न नहीं है।[२५]

अत: उपर्युक्त विवेचनों से स्पष्ट होता है कि उपनिषदों में तथा सूफीवाद में प्रर्याप्त साम्य है। दोनों का उद्देश्य कर्मकाण्ड रहित समतामूलक समाज की स्थापना करना था।

---

24. w.w.w. vskgujarat.com/ उपनिषदों के फारसी अनुवाद & 'दाराशिकोह' नवीनपन्त, हार्परकालिंग पब्लिशर्स इण्डिया।
25. वही

(ग) उपनिषदों का लैटिन एवं अन्य अनुवाद

उपनिषदों के फारसी अनुवाद की पाण्डुलिपि 'आनक्वेतिल टु पोरो' (1731-1805) नामक एक फांसीसी महान विद्वानों के हाथों में उस समय प्राप्त हुई जिस समय वह भारत में भ्रमण करके पूर्व के धर्मों का अध्ययन कर रहा था। उन्होंने अन्य पाण्डुलिपियों से तुलना करके उन सभी 52 उपनिषदों का लैटिन में (1801-1802) में अनुवाद कर इन ग्रन्थों ने यूरोप का ध्यान न केवल उपनिषदों की ओर ही नहीं ब्लकि भारत की ओर भी आकृष्ट किया।[26]

ऐतिहासिक महत्त्व और प्रभाव की दृष्टि से संस्कृत उपनिषदों के साथ इन लैटिन संस्करणों का भी स्मरण करना होगा। इस अनुवाद संकल्प से समस्त पश्चिमी देशों में उपनिषदों का अमृत प्रकाश विकीर्ण हो सका। इसके अध्ययन के बाद ही शाँहपनर उपनिषद के अपूर्व आराधक बन गये। सांस्कृतिक सम्पर्क के यशोगान के बीच इतनी गरिमामय घटना अन्यत्र दिखाई नहीं पड़ेगी। यह अनुवाद अपूर्व सम्भावनाओं से भरे दृष्टान्त प्रस्तुत करते हैं। तीन संस्कृतियाँ यहाँ आलिङ्गन बद्ध होकर खड़ी है। यह भारत के तत्त्वज्ञान की आदिम सम्पदा को ईस्लाम के हाथों यूरोप द्वारा वात्सल्यपूर्वक अपनाएँ जाने के सांस्कृतिक समागम का अलौकिक दृष्टान्त है। मुण्डकोपनिषद् के विख्यात मन्त्र "**ब्रह्म वेद ब्रह्मैव भवति।**"[27] (3.29) का अनुवाद करके इसे उपनिषद के आमुख वाक्य के रूप में रखा गया है।

इन लैटिन अनुवाद के पण्डित-पाठकों का विचार है कि इसका ऐतिहासिक महत्त्व चाहे कितना भी क्यों न हों किन्तु एक अनुवाद के रूप में यह सम्भव नहीं है। फारसी अनुवाद काफी स्वतन्त्र है। किन्तु इस लैटिन अनुवाद को तो पढ़ना भी कठिन कार्य है। पाल डॉयसन का विचार है कि कि शाँहपनर इस अनुवाद को अध्ययन कर उपनिषदों की उज्जवलता से

---

26. w.w.w. vskgujarat.com/ उपनिषदों के फारसी अनुवाद & 'दाराशिकोह' नवीनपन्त, हार्परकालिंग पब्लिशर्स इण्डिया।
27. मुण्डकोपनिषद 3.29

Scanned with CamScanner

अवगत हो गए थे तो यह उनकी अर्न्तदृष्टि की महिमा से ही हुआ होगा। ऐसा होने के बावजूद यूरोप के उत्सुक पाठकों ने इसका अध्ययन किया होगा। इसके माध्यम से यूरोप में एक उपनिषद् युग का उद्भव हो गया था। यह जो कुछ सम्भव हुआ उसका सारा श्रेय उपनिषदों को ही देना पड़ेगा। यदि कृति इतनी महत्त्वपूर्ण न होती तो नीरस अनुवाद होते हुए भी उसे इतना आदर नहीं मिलता। इस अनुवाद के बाद तो अनुवाद की एक लम्बी श्रृंखला चल पड़ी।[28]

सामान्य रुप से अनुवाद के अनुवाद का अनुवाद नहीं होता। अंग्रेजी अनुवादक **'राबर्ट एर्नेस्ट ह्यूम'** भी इस बात से बड़े आश्चर्य चकित थे और उन्होंने कहा कि इस तरीके से एक आध्यात्मिक कृति का उत्तरोत्तर तीसरा अनुवाद न तो कभी हुआ और न कभी होगा।[29]

बिब्लियोतिका इंदिका नामक (Bibliothica Indica) नामक विश्वविख्यात ग्रन्थावली में रोवट (1805-66) नाम के एक जर्मन विद्वान ने तैतरीय, ऐतरेय, श्वेताश्वतर, केन, ईश, कठ, प्रश्न, माण्डूक्य आदि उपनिषदों का अनुवाद 1853 में किया। इसके अतिरिक्त भी प्रसिद्ध जर्मन विद्वान मैक्समूलर के अनुवाद "विश्व पौरस्त्य ग्रन्थावली (Secred books of the East) के प्रथम खण्ड 1879 ई० और पन्द्रहवें खण्ड (1884) में आये हैं। यद्यपि वह एक ख्याति प्राप्त विद्वान् थे फिर भी उनके अनुवाद को इतना अच्छा नहीं कहा जा सकता।[30]

मैक्समूलर उपनिषदों के अनुवाद की सभी कठिनाइयों से परिचित थे। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा था कि उपनिषदों का अनुवाद असम्भव था। इन कमियों और कठिनाइयों के होते हुए भी यह ग्रन्थमाला उपनिषदों को विश्वस्तर पर प्रतिष्ठित करने में सफल रही है।

पॉल डायसन ने उपनिषदों का दर्शन (Philosophy of Upanishads) नामक अद्वितीय ग्रन्थ के जरिए उपनिषदों को समग्र और सांगोपांग अध्ययन

28. उपनिषद् : अनुवाद और साहित्यिक अवदान पृ० 100-105
29. वही
30. वही

विश्व के सामने प्रस्तुत किया था। उन्होंने उपनिषदों का प्रामाणिक और वैज्ञानिक अनुवाद भी प्रदान किया था। यह अनुवाद ज्ञान की गहनता और विशालता के कारण उपनिषदों के गरिमा के सर्वाधिक अनुरूप है। यह ग्रन्थ पाश्चात्य कलाकारों, विचारकों तथा लेखकों के मन को उपनिषदों की ओर सप्रमाण और सप्रणाम उन्मुख कर सका। उन्होंने लिखा है कि उपनिषदों के भीतर जो दार्शनिक कल्पना है, वह भारत में तो अद्वितीय है ही सम्भवत: सम्पूर्णविश्व अतुलनीय है– "Philosophical conceptions unequaled in India or perhaps any where else in the world"[31]

वृहदारण्यक के दकार त्रय के उद्बोधन के बारे में मैक्समूलर 1884 से पहले ही लिख चुके थे किन्तु इलियट ने अपनी अलौकिक कविता 'ऊसर भूमि' के विरामखण्ड को विचार रमणीय बनाने के लिए उस भाव को मैक्समूलर से नहीं, डायसन की इस कनक खान से ढूँढ़ निकाला था।

पढ़े-लिखे लोगों के लिए सर्वप्रथम अंग्रेजी अनुवादक राबर्ट एर्नेस्ट ह्यूम का प्रमुख तेरह उपनिषद् (The Thirteen principal upanishds, 1921) है। अनुवाद में प्रयुक्त हर शब्द सुपरीक्षित है और अध्ययन में अभिव्यक्ति हर अभिमत विचार गर्भित है। यह ग्रन्थ, उपनिषद - अनुवाद के प्रयासों में आस्था के साथ उल्लेख करने लायक एक सुन्दर मिशाल है। इस कृति में सर्वत्र अविकल पाण्डित्य की आभा दर्शनीय है, जिसे पाश्चात्य विद्वानों का वर्गपरक उत्कर्ष बोध या भारतीयों के राष्ट्र-प्रेम की दृढ धर्मिता कलंकित नहीं कर सकती है।[32]

उन्नीसवी शताब्दी के जर्मन- भारतीय विद्वानों में उपनिषदों का अनुवाद करके टीका सहित प्रकाशित किया है–

(1) आटो वोन वोंटलिंग ने 1815-1904 में कठ, प्रश्न आदि उपनिषदों को अनुवाद करके टीका सहित लिपजिंग से प्रकाशित किया है।[33]

31. उपनिषद् : अनुवाद और साहित्यिक अवदान पृ० 100-105
32. वही
33. वही

Scanned with CamScanner

(2) चार्ल्स जानस्टन ने 1896 में में कठ, प्रश्न, छान्दोग्य आदि का अनुवाद डबलिन प्रकाशित किया था। इसके प्राक्कथन में उपनिषदों के बारे में कई आत्मीयतापूर्ण उल्लेख है।[34]

(3) जी०आर०एस० मीड़ तथा जगदीश चन्द्र चट्टोपाध्याय के संयुक्त प्रयास से थियोसोफिकल सोसायटी (ब्रह्मविद्या) के तत्वावधान में 1896 में कई खण्डों वाला एक संकलन लंदन से प्रकाशित किया गया था। इसमें नौ उपनिषद् शामिल है। इन्होंने उपनिषद् की भूमिका में लिखा है कि उपनिषद् विश्वधर्म ग्रन्थ (world Scriptures) है और सारे वर्गों और सभी युगों में सभी धर्म और सत्य के प्रेमियों को आकृष्ट करते रहे थे।[35]

इसके अतिरिक्त कनोपनिषद् का अंग्रेजी अनुवाद हिरियन्ना और वरदाचार्य ने किया। हिरियन्ना ने वृहदारण्यकोपनिषद का भी अनुवाद किया। मैत्रेयोपनिषद् का ई०वी० कोवेल ने, तैतरीयोपनिषद् का महादेव शास्त्री ने, छान्दोग्य उपनिषद् का गंगानाथ झा ने, वैष्णवोपनिषद् का टी०आर० श्री निवास अयंगर ने अंग्रेजी अनुवाद किया। उपनिषदों के अनुवाद बहुत बड़ी संख्या में किये गये हैं।

(घ) उपनिषदों का पश्चिमी विचारों पर प्रभाव

उपनिषदों के अनुवादों का गहरा असर शोपेनहॉवर पर हुआ। शोपेनहॉवर की मेज पर उपनिषदों की एक लैटिन प्रति रहती थी और वे सोने से पहले उसमें से ही अपनी प्रार्थनाएँ किया करते थे। उपनिषदों के सन्दर्भ में शोपनेहावर के विचार है कि– "(उपनिषदों के) प्रत्येक वाक्य में से गहन, मौलिक और उदात्त विचार फूटते है और सभी कुछ एक उच्च, पवित्र और एकाग्र भावना से व्याप्त हो जाता है। समस्त संसार में उपनिषदों जैसा कल्याणकारी और आत्मा को उन्नत करने वाला कोई और ग्रन्थ नहीं है ये सर्वोच्च प्रतिभा के प्रसून हैं। देर-सवेर में लोगों की आस्था का आधार बनकर रहेंगे।"

34. उपनिषद् : अनुवाद और साहित्यिक अवदान पृ० 100-105
35. वही

उपनिषद् में सर्वत्र कितनी सुन्दरता के साथ वेदों के भाव प्रकाशि
है, जो कोई भी उक्त फारसी लैटिन अनुवाद का ध्यान देकर अध्ययन कर
उपनिषद् की अनुपम भावधारा से परिचित होगा, उसी की आत्मा
गम्भीरतम प्रदेश तक में एक हलचल मच जायेगी। एक-एक पंक्ति कित
दृढ़, सुनिर्दिष्ट और सुसमञ्जस अर्थ प्रकट कर रही है। सम्पूर्ण ग्रन्थ कै
उच्च, पवित्र तथा ऐकान्तिक भावों से ओत-प्रोत है। सारे पृथ्वीमंडल में मू
उपनिषद् के समान इतना फलोत्पादक और उच्च भावोत्पादक ग्रन्थ क
भी नहीं है। इसने मुझकों जीवन में शान्ति प्रदान की है और मरण में
यह शान्ति देगा।[36]

(2) पाश्चात्य विद्वान **मैक्समूलर** के अनुसार "यदि शोपेन हावर
इन उपनिषद् सम्बन्धी शब्दों के लिए किसी समर्थन की आवश्यकता है
मैं अपने जीवन भर के अध्ययन के आधार पर प्रसन्नतापूर्वक अपना समथ
दूँगा।" उन्होंने अपनी पुस्तक *"India what can it teach us"* में लिखा
कि मृत्यु के भय से बचने के लिए पूरी शक्ति से तैयार करने और सत्य
जानने के इच्छुक जिज्ञासु के लिए उपनिषदों के अतिरिक्त और कोई श्रे
मार्ग मेरी दृष्टि में नहीं है। उपनिषदों के ज्ञान से मुझे अपने जीवन के उत्त
में भारी सहायता मिली है। मैं उनका ऋणी हूँ। ये उपनिषदें आत्मिक उन्न
के लिए विश्व के धार्मिक साहित्य में अत्यन्त समानास्पद रही है और अ
सदा रहेगी। यह ज्ञान मनीषियों की महान प्रज्ञा का परिणाम है। एक न ए
दिन भारत की यह श्रेष्ठ विद्या यूरोप में प्रकाशित होगी तब हमारे ज्ञान ए
विचारों में महान परिवर्तन उपंस्थित होगा।[37]

(3) 'Dogmas of Bhuddism' नामक ग्रन्थ के लेखक डी० ह
ने लिखा है कि सुकरात, अरस्तू, अफवावून आदि कितने दार्शनिकों
ग्रन्थ मैंने ध्यान पूर्वक पढ़े हैं, पर जैसी शान्तिमयी आत्मविद्या मै
उपनिषदों में पायी वैसी और कही देखने को नहीं मिली।[38]

विण्टरनित्स के अनुसार उपनिषदों के रहस्यमयी सिद्धान्तों की ए

36. उपनिषद् : अनुवाद और साहित्यिक अवदान पृ० 100-105
37. वही
38. वही

Scanned with CamScanner

विचारधारा के चिह्न फारसी, सूफीधर्म के रहस्यवाद में, नवप्लेट वादियों और सिकन्दरिया के ईसाई रहस्यवादियों, एकहार्ट और यलेर के गुहा ब्रह्मविद्या सम्बन्धी लोगस सिद्धान्त में और अन्त में उन्नीसवीं शताब्दी के महान् जर्मन रहस्यवादी शोपेनहावर के दर्शन में खोजे जा सकते हैं।[39]

(ङ) उपनिषदों का पूर्वी विचारों पर प्रभाव

उपनिषदों को समझने के लिए इनके ऋषियों के दृष्टिकोण को समझना आवश्यक है।

स्वामी विवेकानन्द ने कहा है कि "उपनिषदों का अध्ययन करने पर उनके नेत्रों से अश्रुधारा प्रवाहित होने लगती है।"[40]

उपनिषद् शक्ति का मूल है। उसमें प्रवाहित शक्ति से बल, शौर्य तथा नव जीवन का संचार होता है। इनके सन्देश से व्यक्ति स्वाश्रित होकर भवबन्धनों से मुक्त होने का प्रयास करता है। शारीरिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक उन्मुक्तता का प्रयास तथा आत्मोन्नति उपनिषदों का मूल मन्त्र है। स्वामी विवेकानन्द के अनुसार उपनिषद् ज्ञान की आवश्यकता केवल ब्रह्म प्राप्ति के लिए ही नहीं अपितु दैनिक जीवन के लिए भी उपयोगी है। उपनिषदों से वह शक्ति प्राप्त होती है, जिसके द्वारा मानव जीवन संग्राम का धैर्य तथा साहसपूर्वक सामना कर सकता है। जीवन के आध्यात्मिक तथा भौतिक उभय क्षेत्र में उपनिषदों की आवश्यकता है।

विश्वकवि रविन्द्र नाथ टैगोर के अनुसार "चक्षु सम्पन्न व्यक्ति देखेगे कि भारत का ब्रह्मज्ञान सम्पूर्ण पृथ्वी का धर्म बनने लगा है। प्रात:कालीन सूर्य की अरुणिम किरणों से पूर्व दिशा आलोकित होने लगी है, परन्तु जब वह सूर्य मध्याहन गगन में प्रकाशित होगा, तब उस समय उसकी दीप्ति से समस्त भूमंडल दीप्तिमय हो उठेगा।"[41]

डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन् ने अपनी पुस्तक उपनिषदों का सन्देश में लिखा है कि "उपनिषदों को जो भी मूल संस्कृत में पढ़ता है, वह मानव

39. उपनिषद् : अनुवाद और साहित्यिक अवदान पृ० 100-105
40. वही
41. विण्टरनिरस-ए हिस्ट्री ऑफ इण्डियन लिटरेचर अंग्रेजी अनुवाद खण्ड

आत्मा तथा परम सत्य के गुहा तथा पवित्र सम्बन्धों को उजागर करने वाले तथा उनके बहुत से उद्गारों के उत्कर्ष काव्य और प्रबल सम्मोहन से मुग्ध हो जाता है और उसमें बहने लगता है।"[42]

आचार्य बिनोवा भावे ने अपनी पुस्तक उपनिषद् एक अध्ययन में लिखा है कि "उपनिषदों की महिमा अनेकों ने गायी है। कवि ने कहा है कि हिमालय जैसा पर्वत नहीं तथा उपनिषदों जैसी कोई पुस्तक है ही नहीं वह तो एक दर्शन है।"[43]

इस प्रकार उपनिषदों के आकर्षण में अद्वितीय विविधता के दर्शन होते हैं। धार्मिक अन्वेषण की व्याकुलता तथा तत्परता इनमें दृष्टिगोचर होती है। इनके विचारकों के द्वारा वर्णित विषयों में आदर्श वादिता, दार्शनिकता तथा सत्य के अनवरत अन्वेषण की लालसा अभिव्यक्त होती है। उपनिषदों के विचारों के द्वारा बाह्य आकर्षणों से ऊपर उठने की प्रेरणा प्राप्त होती है। इसमें वर्णित अक्षय अर्थवत्ता तथा आत्मिक शक्ति से अर्न्तदृष्टि तथा आन्तरिक बल प्राप्त होता है, जिसमें नव उर्जा का सञ्चार होता है। उपनिषद् व्यवस्थित चिन्तन से अधिक आत्मिक प्रकाश के साधन प्रतीत होते हैं। इनके द्वारा विविध प्रकार के आत्मिक अनुभव का संसार उद्घटित हुआ है। इनके द्वारा व्यक्त किये गये सत्य की पुष्टि केवल भाग तर्क बुद्धि के द्वारा ही नहीं अपितु स्वानुभूति से होती है। इनका उद्देश्य व्यावहारिक है।

२.२ पश्चिम में गीता

श्रीमद्भागवद्गीता को प्रस्थानत्रयी के अन्तर्गत माना गया है। गीता उपनिषद् और ब्रह्मसूत्र तीनों ग्रन्थ प्रस्थानत्रयी के अर्न्तगत प्रमाणित हैं। इनके माध्यम से आत्मतत्त्व के प्रत्यक्षीकरण में एवं मनुष्य को आत्मा से साक्षात्कार कराया जाता है। श्रीमद्भागवद्गीता श्री कृष्णद्वैपायन वेदव्यासकृत महाभारत के भीष्मपर्व का पच्चीसवें अध्याय से बयालीसवें अध्याय तक का संग्रह ग्रन्थ है। इस प्रकार इस कृति के रचयिता श्री वेदव्यास जी है। अजर-अमर कृतिकार की यह कृति भी अजर-अमर और अद्भुत है। इसके विषय में भी स्पष्टोल्लेख है कि —

42. उपनिषद् : अनुवाद और साहित्यिक अवदान पृ० 100-105
43. वही।

Scanned with CamScanner

गीता सुगीता कर्त्तव्या किमन्यैः शास्त्रविस्तरैः।
या स्वयं पद्मनाभस्य मुखपद्मादिनिःसृता।।[44]

अद्वितीय एक परमात्मा श्रीकृष्ण का वचनामृत श्रीमद्भागवद्गीता भी अद्वितीय ग्रन्थ के रूप में निरूपित हैं—

एक शास्त्रं देवकी पुत्र गीत्–
मेको देवो देवकीपुत्र एव
एको मन्त्रस्त्यस्य नामानि यानि,
कर्माप्येकं तस्य देवस्य सेवा।।[45]

नवनवोन्मेष प्रज्ञा समन्विता सद्चिन्तन परिपूर्णा एवं प्रतिक्षण नवीनता के सच्चिदानंद रूप से साक्षात्कार कराती हुई यह परमरम्या या रमणीयता का सुरूप है। इस के लिए यह सूक्ति सार्थक है—

''क्षणे क्षणे यन्नवतामुपैति तदैव रूपं रमणीयतायाः।'' माघकवि

1935 से लेकर 1941 तक दो प्रकार के अनुवाद सामने आये। वे प्रमुख भारतीय और पश्चिमी विद्वानों को एक साथ एकत्रित करने का प्रयास किया जिसे पूर्व की आध्यात्मिक प्रमाणिकता और भगवद्गीता की सार्वभौमिक प्रासंगिकता को कायम रखने में बहुत महत्त्वपूर्ण माना जाता है। ये दोनों प्रकार के अनुवाद प्रतीकात्मक थे। ये संस्कृत से सीधे यूरोपीय भाषा में अनुवादित होने के कारण व्यापक रूप से जाने गये पाठ होने की प्रतिष्ठा अर्जित किया और इन्होंने गीता को यूरोप और अन्य क्षेत्रों में ध्यान आर्कषित किया।[46]

इन प्रारम्भिक अंग्रेजी अनुवादों की एक विशेषता यह थी कि इन्होंने गीता को हिन्दू धर्म के भीतर उच्च अमूर्त दार्शनिक विचारों की अभिव्यक्ति के रूप में प्रस्तुत किया, जो इसके निचले, लोकप्रिय अंधविश्वासपूर्ण रूपों

44. संस्कृत साहित्य का इतिहास
45. वही
46. वही

से मिली थी। इसके साथ ही विल्किन्स के अनुवाद के प्रकाशन के एक साल बाद सर एडविन अर्नाल्ड ने गीता को रिक्त कविता "The song celestial" के रूप में 1885 ई० अनुवादित किया इसने गीता के सबसे महत्त्वपूर्ण और सबसे व्यापक रूप में पढ़ने वाले संस्करण के रूप में प्रसिद्धि हासिल की। इन्होने भी गाँधी जी को जीवन भर गीता पढ़ने के लिए प्रेरित किया।

२.२.१ भारत में गीता का अनुवाद

भारत में अनुवाद करने वाले विद्वानों के लिए भगवद्गीता एक पवित्र पुस्तक है। क्योंकि उनका यह विश्वास था कि गीता अभी भी जीवंत रूप से जीवित है और नित्य नवीन ज्ञान से खुद को पुनर्जन्म करती रहेगी। गीता का अनुवाद करना और आन्तरिक अर्थ की व्याख्या करना एवं साथी भारतीयों को शिक्षित करने का एक कार्य हैं; और सत्य को फैलाने के लिए एक कर्तव्य के रूप में था। यह गीता को एक सार्वभौमिक संदेश के रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास भी था और हिन्दू धर्म का अन्य कठोर धार्मिक धर्मों के विपरीत जीवन के एक खुले अंतदृष्टिकोण के रूप में था।

अनुवाद में लगे भारतीयों की बहुत बड़ी संख्या ने भगवद्गीता को सर्वोच्च हिन्दु दार्शनिक विचारों के उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया। उदाहरण स्वरूप **तिरुवलुमसुव्वारो** की पुस्तक *"Discourse on the Bhagavad gita (1888)* और *R. Shivshankar Pandiyaji's* का अनुवाद *Bhagavad gita sara Bodhini or the Essential Teaching of the Bhagavad gita (1897)* में अनिवार्य एवं आवश्यक शिक्षण पर अपने दर्शन का अध्ययन करने हेतु तथा छात्रों की मदद करने के लिए किया गया था।[47]

20वीं सदी के प्रारम्भ में भारतीयों ने विशेष रूप से राष्ट्रवादियों ने औपनिवेशिक भारत के बीच गीता को उभरते हुए भारतीय राष्ट्रीय सदाचारों

47. https://sreenivasaravs.com/Tag/Translation of the gita-indo-european-Language.

Scanned with CamScanner

के केन्द्रीय कार्य के रूप में बढ़ावा दिया। उनके अनुसार नया युद्धक्षेत्र विट्रिस राज्य का था जो समेकित सामाजिक और राजनीतिक कार्यवाही के लिए खुला रहा था जबकि इस तरह की कार्यवाही का रूप बहस का विषय "हिंसा बनाय अहिंसा" था।

गीता प्रेस गोरखपुर ने बीसवी शताब्दी की शुरूआत में आम लोगों के बीच गीता के संदेश को फैलाने का महान कार्य किया।

काशीनाथ त्र्यंबक तेलंग और गीता[48]

गीता को अंग्रेजी में अनुवादित करने वाले प्रथम भारतीय 'काशीनाथ त्र्यंबक तेलंग' (1858-1893) थे जो एक संस्कृत विद्वान् इंडोलाजिस्ट और बाम्बे हाईकोर्ट में न्यायाधीश थे। इन्होंने प्रथम बार 1875 में गीता के अनुवाद को पद्य रूप में प्रकाशित किया। इसे बाद में 1882 में गद्य - अनुवाद खण्ड के रूप में सामने आया।

मैक्समूलर द्वारा संपादित **'द सीक्रेट बुक्स ऑफ द ईस्ट'** के 8वें वाल्यूम से 8 का शीर्षक *"The Bhagavadgita with the Sanatsugatiya and the Anugita"* जो कि 1882 में **'द क्लेरेंडन प्रेस आक्सफोर्ड'** से प्रकाशित किया गया।

तेलंग के गीता के अनुवाद के खंड में **'सनात्सुजाति और अनुगीता'** के अनुवाद भी शामिल है। सनात्सुजातीय महाभारत के उद्योग पर्व में ऋषियों सनत सुजाता द्वारा अंधे राजा धृतराष्ट्र को पढ़ाने के रूप में प्रकट होता है। यह एक दार्शनिक साहित्य है, जिसकी रचना पाँच अध्यायों में अर्थात् (अध्याय 41-46) में की गई है।

अनुगीता - अनुगीता का अर्थ है गीता का अनुसरण करने वाली। महाभारत के अश्वमेध पर्व में भगवद्गीता की अगली कड़ी के रूप में दिखाई देती है। यह फिर से **कृष्ण और अर्जुन** के बीच संवाद है। यह

48. https://sreenivasaravs.com/Tag/Translation of the gita-into-european-Language.

इन्द्रप्रस्थ में पांडव के महल में वार्तालाप होता है, क्योंकि कृष्ण कुरूक्षेत्र के युद्ध में अपनी जीत के बाद पांडवों को हस्तिनापुर के राज्य को वहाल करने में मदद करने के बाद द्वारका वापस आए थे। काशीनाथ त्र्यंबक तेलंग मैक्समूलर द्वारा संपादित "The secred Book of the east" नामक पवित्र पुस्तक के वाल्यूम में योगदान करने वाले दो विद्वानों में शामिल थे। एक स्वयं थे तो दूसरे आर० जी० भण्डारकर थे। विद्वता और विविधता की दृष्टि से तेलंग की गीता अनुवाद को भारत में अधिक लोक प्रियता मिली किन्तु इसे इंग्लैण्ड में गम्भीर रूप से समीक्षा नहीं मिली।

तेलंग के बारे में एडविन अर्नाल्ड ने गीता के अपने अनुवाद परिचय में लिखा है कि "Mr. Telang has also published at Bombay a version in colloqulal rhythm, eminently learned and intelligent, but not conveying the dignity or grace of the original." अर्थात् इनके कहने का आशय यह था कि गीता का आम बोलचाल की लय में एक संस्करण प्रकाशित किया जो व्यापक रूप से प्रचलित और विद्वतापूर्ण है लेकिन यह मूल की गरिमा लोकप्रियता तथा लोकप्रियता को व्यक्त करता है।

थियोसोफिस्ट और गीता[49]

गीता के प्रमुख विचारों पर एक विद्वतापूर्ण गूढ़ टिप्पणी थियोसोफिस्ट देते है। मोहिनी मोहन चटर्जी (1858-1936) में बंगाल थियोसोफिकल सोसायटी और थियोसोफिकल मूवमेंट के महत्वपूर्ण सदस्य थे। इन्होंने गीता का अनुवाद "Bhagavad Gita or the Lord's Lay' 1887 से किया।

विलियम क्वान जज ने अपने निबंधों में गीता (1890) में महाभारत की पूरी तरह से एक तरफा व्याख्या प्रस्तुत की।

49. https://sreenivasaravs.com/Tag/Translation of the gita-into-european-Language.

Scanned with CamScanner

द्वारा रूसी 1787 में किया गया जिसने काउंट लियो टालस्टाय को प्रेरित किया और सभी जर्मन अनुवाद 1802 में फ्रेडरिक वान मजर द्वारा (Der Bhagavat gita, oder Gesprache Zwischen krishna and Arjoon) के नाम से किया गया।

2.2.2.3. जर्मन में गीता का अनुवाद

1. श्लेगल बन्धु और गीता[५९]

फ्रेडरिक श्लेगल जिन्हे कार्ल विल्हेम फ्रेडरिक भी कहा जाता है। ये जर्मन कवि, दार्शनिक और इंडोलाजिस्ट के रूप में महान कार्य किया। इन्होंने अपने बड़े भाई आगस्त विल्हेम वान श्लेगल को संस्कृत का अध्ययन करने के लिए पेरिस जाने के लिए प्रेरित किया। इस प्रकार श्लेगल भाइयों विशेष रूप से बड़े फ्रेडरिक को रोमांटिक स्कूल के संस्थापक के रूप में भी जाना जाता है जिन्होंने 19वीं शताब्दी के शुरूआत में जर्मन साहित्य के विकास को गहराई से प्रभावित किया।

आगस्त विल्हेम वान श्लेगल (1767-1845) में प्रो० वॉन, विश्वविद्यालय में इण्डोलाजी और संस्कृत के प्रोफेसर थे। इन्होंने गीता के लैटिन संस्करण को मूल संस्कृत पाठ के साथ 1803 में प्रकाशित किया। यह गीता का यूरोपीय भाषा में पहला प्रत्यक्ष अनुवाद था।

1820 और 1830 के बीच आगस्त श्लेगल ने (Indische Bibliothk) ने भारतीय ग्रन्थों का संग्रह प्रकाशित किया। इनको जर्मनी में 'संस्कृत भाषा विज्ञान' का संस्थापक माना जाता है। इन्होंने भगवद्गीता की प्रशंसा में कहा था कि — "It the study of Sanskrit had brought nothing more than the satisfaction of scperb to read this upcrb poem in the original I would have been amply compensated for all my labours. It is a sublime reunion of Poetic and Being able philosophical genis."[६०]

59. https://sreenivasaravs.com/Tag/Translation of the gita-into-european-Language.
60. Ibid.

2. फ्रान्ज हार्टमैन और गीता

एक जर्मन मेडिकल डॉक्टर थियोसोफिस्ट और गूढ़ व्यक्ति डॉ० फ्रान्ज हार्टमैन द्वारा जर्मन में भगवद्गीता का एक अनुवाद "Bhagavad gita, Die (Nuch diesm Titell Suchen, whitelotous Lipzig, 1924)" में प्रकाशित किया गया।

3. हेनसिक हिमकर और गीता[६१]

हेनसिक हिमकर एक नाजी था वास्तव में वह एक जटिल प्रकार का व्यक्ति था। फिलिन्स कर्स्टन के अनुसार 1941 ई० में मृत्यु के चार वर्षों के पहले से हिमकर अपने जेब में भगवद्गीता की एक प्रतिलिपि रखा करता था। इसे रात में नियमित रूप से अध्ययन करता था और इसका अनुवाद डॉ० हार्टमैन द्वारा किया गया था।

4. पुरोहित स्वामी और भगवद्गीता[६२]

1935 पुरोहित स्वामी के द्वारा भगवद्गीता का अनुवाद फैबर एण्ड फैबर से "The Geeta; The Gospel of the Lord Shri Krishna." के नाम से प्रकाशित किया गया। स्वामी ने अपने सत्तरवें जन्म दिन पर प्रकाशित करवाया। इस पुस्तक के प्रकाशित होने पर स्वामी और डब्लू० बी० याट्स के बीच सम्बन्ध बढ़ गया। याट्स ने अपने कुछ वर्षों को पुरोहित स्वामी के कार्यों के प्रकाशन और प्रचार के लिए समर्पित किया गया। दोनों ने महान योग्यता की कई पुस्तकों का उत्पादन करने के लिए मिलकर काम किया।

1935 में स्वामी ने माण्डूक्य उपनिषद, का अनुवाद प्रकाशित किया जिसके लिए याट्स ने एक भूमिका लिखा। इसके पश्चात् 1938 में पतंजलि के योग का अनुवाद "Translations of Patanjali's Apporism of yoga" के नाम से दस मुख्य उपनिषदों का अनुवाद याट्स की भूमिका के साथ फैबर एण्ड फैबर से प्रकाशित किया।

61. https://sreenivasaravs.com/Tag/Translation of the gita-into-european-Language.
62. Ibid.

Scanned with CamScanner

याट्स ने आक्सफोर्ड ऑफ मॉर्डन कविता में 1892-1935 में स्वामी के अनुवादों को शमिल किया।

२.२.३ गीता का पाश्चात्य विद्वानों पर प्रभाव

गीता का अनुवाद पचास से अधिक भाषाओं में किया गया है। पूर्वी और पश्चिमी भाषाओं में इस पर सैकड़ों टिप्पणियाँ है। भारत के बाहर गीता को हिन्दू धर्म को समझने का पहला माध्यम और सबसे प्रथम कार्य माना जाता है। यहाँ पर गीता को पाठकों के जवावों और व्याख्याओं के माध्यम से जीना जारी रखा गया है।

1. Richard H. Davis[63]

"The Bhagavad Gita : A Biography, Princeton university" में लिखते है कि — "The work has lived a Vivid and contentious existence over the centuries since, through readings and recitations translations and commentaries that have transcribed this classic into many currents and disputes.

Thus the medival Hindu Gurus, British colovial scholars, German romantics, Globetrotting spiritual speakers, Indian anti calonial Freedom fighters, western students and spritual seekers all have engaged in dialogue with the Gita, each in his/her own manner. अर्थात् कहने का आशय यह है कि भगवद्गीता प्राय: सभी भारतीय शास्त्रों में सबसे प्रसिद्ध है जिसे सार्वभौमिक रूप से दुनिया की आध्यात्मिक और साहित्यिक कृतियों में से एक माना गया है। रिचर्ड डेविस इस पूजनीय और स्थायी पुस्तक की कहानी को प्राचीन भारत में इसकी उत्पत्ति से लेकर आज के आगमन तक एक आध्यात्मिक साहित्य (क्लासिक) के रूप में बताया है। जिसका अनुवाद सरल ढंग से अधिक भाषाओं में किया गया है।

63. https://sreenivasaravs.com/Tag/Translation of the gita-into-european-Language.

2. चाल्स विलिकिन्स[64]

विल्किन्स के कर्मो के साहित्यिक गुणों की प्रशंसा करते हुए वारेन हेस्टिग्स ने कहा है कि — "A Performance of great originality, of a sublimity of conception, reasoning and diction almost unequaled, and single exception among all the known religions of Mankind of a theology accurately corresponding with that of the christion dispensation and most powerfully illustrating its fundamental doctorines."

हेस्टिम्स ने बल देते हुए कहा है कि गीता की शिक्षाओं का अध्ययन और सही अभ्यास मानवता को शांति और आनन्द प्रदान करने के लिए है इन्होंने कुछ अनुवादित पंक्तियों को लिखते हुए कहा है कि —

- Let the motive be in the Deed, and not in the event;
- Be not one whose motive for Action is the hopes of Reward, let not the life be spent in incation depend on application.
- Perform the Duty, abandon all thought of the consequence, and make the event Equal it terminate in good or evil; or such an equality is called application.

विलियम हेस्टिग्स को यह विश्वास था कि भारत में विट्रिस वर्चस्व तव तक अस्तिव में रहेगा जबतक गीता जीवित रहेगी।

इन दोनों ने अनुमान लगाया था कि गीता में विट्रिस रूचि सबसे अधिक होगी और इसके सांस्कृतिक वस्तु की ओर जिज्ञासा उत्पन्न की जायेगी। उनका अनुमान था कि यह पहलू अन्तत: इंग्लैण्ड में अपने पाठकों के लिए सबसे अधिक संकेत देने वाला ज्ञान सावित होगा।

गीता ने शुरूआत में मुख्य रूप से दूरदराज के पूर्व के अज्ञात अतीत से या मानव सभ्यता के अपरिपक्व और आदिम चरण के एक झलक के रूप में उत्सुक सांस्कृतिक वस्तु के रूप इंग्लैण्ड में प्रचार प्राप्त किया।

64. https://sreenivasaravs.com/Tag/Translation of the gita-into-european-Language.

Scanned with CamScanner

इस प्रकार कहा जा सकता है कि गीता का महत्त्व किसी भी आतंरिक गुणवत्ता में नहीं था लेकिन इसके मूल्य के पौराणिक कथाओं का एक उत्सुक नमूना और हिन्दुओं के विश्वास और धार्मिक विचारों के एक प्रामाणिक मानक के रूप में उपलब्ध था।

अठारहवीं और उन्नीसवीं शताब्दी के शुरुआत में भगवद्गीता को काव्यगीत या पवित्रशास्त्र के रूप में मानने के वजाय दार्शनिक प्रकृति के साहित्य के रूप में माना गया था। विल्किन्स के इस कार्य ने सामान्य पाठकों के अतिरिक्त ईसाई मिशनरी का ध्यान आर्कषित किया तथा हिन्दू सिद्धान्तों का सामना करने के लिए इसका इस्तेमाल किया।

3. विलियम ब्लेक[65]

विलियम ब्लेक ने 1809 में अपनी तस्वीर 'द रोमिन' में रोमांटिक काव्य बताया और अनुवाद पर कार्य कर रहे विल्किन्स और विद्वान् ब्राह्मणों को चित्रित किया। ब्लेक के चित्र ने सुझाव दिया कि गीता का महत्व गुप्त ज्ञान के एक वस्तु के रूप में अपने ज्ञान के रूप में वौद्धिक श्रम और शाही विजय के माध्यम से पहले से छिपी हुई परम्परा के भीतर अपने अज्ञात रूप से प्राप्त हुआ के रूप में सामने आया।[66]

काफी अनुकूल परिस्थितियों के वावजूद भी विल्किन्स के अनुवाद ने अपने प्रारम्भिक दशकों में ज्यादा महत्त्व नहीं प्राप्त किया।

धीरे-धीरे जिज्ञासा स्वरूप विद्वानों द्वारा इसे गम्भीर अध्ययन के लिए जगह दी गई। विलियम जोल्स ने उन लोगों को आशीर्वादात्मक तथा उन लोगों को शुभात्मक यह सलाह दी कि "from a correct idea of indian religion and liturature to forget all that has been writ- ten on the subject, by ancients and moderns, before the pub- lication of gita (Jones 1799-363)" विल्किन्स के अनुवाद ने पू

65. https://sreenivasaravs.com/Tag/Translation of the gita-into- european-Language.
66. Ibid.

यूरोप के साथ अटलांटिक में अपना रास्ता बना दिया। जहाँ यह अमेरिकी ट्रांसकेडेटलिस्तौ के लिए एक प्रमुख ग्रन्थ बन गया।

4. थामस कालाईल[67]

थामस कालाईल ने गीता के विल्किन्स के अनुवाद की एक प्रति राल्फ वाल्डो एमर्सन को प्रस्तुत किया जो उनके प्रेरणा का सबसे बड़ा स्रोत सावित हुआ। इससे कानकार्ड भी प्रभावित था। अमेरिका में अन्य सभी सामान आन्दोलनों के लिए कानकार्ड का ऋणी था।

उन्नीसवीं और वीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में भगवदगीता के प्राय: सभी अनुवादों ने इसे साहित्यिक कार्य, एक काव्य या दार्शनिक काव्य के रूप में माना लेकिन शास्त्र के रूप में नहीं माना।

5. जे० जे० काकबर्न थाम्पसन, एडविन अर्नाल्ड और जान डेविस[68]

जे० जे० काकबर्न थाम्पसन 1853 में भगवद्गीता या "The saered Lay – A sanskrit philosophical poem" तथा जान डेविस ने 1882 में हिन्दू दर्शन भगवद्गीता या "The sacred lay - A sanskrit philo- sophical poem." तथा एडविन अर्नाल्ड ने (1900) में द सांग सेलेस्टियल या भगवद्गीता "The song celestial or Bhagvadgita Famous Marvelous sanskrit" को प्रसिद्ध अद्भुत संस्कृत काव्य के रूप में सन्दर्भित करते हैं। जिसमें सरल एवं आदर्श भाषा में यह एक दार्शनिक प्रणाली को उजागर करता है।

एडविन अर्नाल्ड ने भगवद्गीता के अपने अनुवाद की प्रस्तावना में लिखा है। कि 'Bhagavad Gita as famous mavelous sanskrit poem in which in Plan and noble language. it unflods a philosophi-

67. https://sreenivasaravs.com/Tag/Translation of the gita-into- european-Language.
68. Ibid.

Scanned with CamScanner

cal systems.' और उसका विश्वास था कि जब यह अनुवादित होगा तो अंग्रेजी साहित्य को बढ़ायेगा।

6. श्री पुरोहित स्वामी[69]

श्री पुरोहित (1882-1946) में हिन्दू भिक्षु था। यह 1931 में विट्रेन से भारत आया। इन्होंने भारतीय दर्शन और भगवद्गीता पर व्याख्यान देने की श्रृंखला से कार्य शुरू किया।

पुरोहित स्वामी एक प्रसिद्ध आयरिश कवि, नाटककार, और साहित्य के क्षेत्र में नोवल पुरस्कार के विजेता (W.B. yets) डब्लू, बी० एटस के सम्पर्क में आये। जिनको आध्यात्मिकता से गहरा लगाव था। इन्होंने थियोसोफिकल सोसायटी के माध्यम से 1886 में हिन्दू दर्शन को प्रस्तुत किया गया।

पुरोहित स्वामी के दो पुस्तकों के बारे में डब्ल्यू बी० यॉट्स ने बताया है–

प्रथम पुस्तक 1932 में मैकमिलन लंदन से प्रकाशित हुई जिसका शीर्षक "'An Indian monk with introduction by W.B. yeats.'

द्वितीय पुस्तक 1934 में फैवर एण्ड फैवर लंदन से प्रकाशित हुई जिसका शीर्षक "Bhagwan Shri Hamsa, The Holy mountain, Translated by Shri Purohit Swami with Introduction."

डब्ल्यू याट्स के आग्रह पर पुरोहित स्वामी ने भगवद्गीता पर एक टिप्पणी लिखी। जिसे विट्रिस जन सामान्य पाठक सरलता से समझ सके। इन्होंने प्राचीन भारतीय अवधारणाओं और संस्कृत नियमों का उपयोग करने से परहेज किया जो अंग्रेजी भाषियों के लिए अनभिज्ञ था। फिर भी वह गीता पाठ के प्रत्येक शब्द को अंग्रेजी में अनुवाद करने में सफल रहे। याट्स ने स्वामी के कार्य को प्रकाशित करने में मदद किया। इस उद्देश्य के

69. https://sreenivasaravs.com/Tag/Translation of the gita-into-european-Language.

लिए डब्ल्यू० बी० याट्स ने "फैवर एण्ड फैवर" के प्रसिद्ध प्रकाशन भण्डार से सम्पर्क किया जहाँ पर विद्वान् कवि टी० एस० इलियट सम्पादक थे।

डब्ल्यू० बी० याट्स की इच्छा थी कि पुस्तक में टी० एस० इलियट भूमिका लिखें जिससे पुस्तक की प्रतिष्ठा और स्वीकार्यता बढ़ेगी। लेकिन इलियट की इच्छा यह नहीं थी। इलियट के हस्तक्षेप के बावजूद फेवर एण्ड फेवर ने पुरोहित स्वामी द्वारा लिखित चार पुस्तकों के प्रकाशन पर विचार किया।

7. एडल्स हक्सले[70]

एडल्स हक्सले ने विभिन्न कड़ियों में गीता की प्रतीकात्मक व्याख्याओं को समझाया जो वाद में पुस्तक के रूप में प्रसिद्ध हो गया। इसमें इन्होंने गीता के सार्वभौमिक बारहमासी दर्शन को स्पष्ट किया है। इसमें उन्होंने स्पष्ट किया है कि "The Bhagvad Gita is the most systematic statement of spiritual evolution of endowing value to mankind. It is one of the most clear and comprehensive summaries of perenmial philosophy euer revealed; Hence its enduring value is subject not only to India but to all of Humanity."

अर्थात् भगवतगीता मानव जाति के लिए अंतिम मूल्य के आध्यात्मिक विकास का सबसे व्यवस्थित कथन है। यह कभी भी प्रकट किए गए वारहमासी दर्शन के सबसे स्पष्ट और व्यापक सारांशों में से एक है; इसलिए इसका स्थायी मूल्य केवल भारत ही नहीं बल्कि पूरी मानवता के अधीन है।

8. ए० वी० वैन वुइटेन[71]

ए० वी० वैन वुइटेन एक पारम्परिक विद्वान व अनुवादक थे। ये

70. https://sreenivasaravs.com/Tag/Translation of the gita-into-european-Language.
71. Ibid.

Scanned with CamScanner

शिकागो विश्वविद्यालय के (South Asian Languages and civilizations) दक्षिण एशियाई भाषाओं और सभ्यताओं के विभाग में संस्कृत के एक इंडोलाजिस्ट और प्रोफेसर थे। अपने स्वल्प जीवन के अन्त में इन्होंने मुख्य रूप से महाभारत के अध्ययन पर ध्यान केन्द्रित किया। जेम्स० एल० फिट् जरगाल्ड द्वारा सम्पादित ए० वी० वैन वुइटेन द्वारा भगवदगीता का अनुवाद और उनके मरणोपरान्त 1981 में गीता के विद्वानों और उत्साही छात्रों द्वारा बहुत अधिक मूल्यांकित किया गया है। महत्त्वपूर्ण अनुवाद के आधार पर उसका अनुवाद और गहराई से विद्वानों के परिचय और कई उपयोगी पाद टिप्पणियों के साथ अध्ययन किया गया है। इसकी प्रामाणिक प्रस्तुति और स्पष्टता को स्पष्ट करने के लिए प्रशंसा की जाती है। यह अपने शुद्ध प्रतिपादन और मूलपाठ की प्रत्यक्षता को बनाएँ रखने के लिए प्रशंसित है।

9. एक नाथ ईश्वरन[72]

एक नाथ ईश्वर एक विद्वान और आध्यात्मिक शिक्षक थे जिन्होंने ध्यान पर कई पुस्तके लिखी। उन्होंने भगवद्गीता, उपनिषद और धम्मपद का भी अनुवाद किया। कहा जाता है कि ईश्वरन ने गीता में गाँधी के प्रभाव में रुचि विकसित की जिसे वह अपनी छोटी उम्र में मिले थे। भगवद्गीता का एकनाथ ईश्वरन का अनुवाद स्पष्ट एवं सुन्दर शब्दों में अंग्रेजी में प्रस्तुत किया जो पढ़ने में सरल है। एक नाथ ईश्वरन ने तीन खण्डों की टिप्पणी भी दी 'The Bhagavad Gita for Daily living' तथा साथ में भगवद्गीता के सार के लिए भगवद्गीता के सार नामक एक सरल टिप्पणी भी की।

ईश्वरन ने गीता की शिक्षाओं को आधुनिक सन्दर्भ में उपयोगी बताया

72. https://sreenivasaravs.com/Tag/Translation of the gita-into-european-Language.

प्रकृति की वास्तविकता, अलगता का भ्रम, पहचान की खोज, योग का अर्थ और भक्ति को व्यवस्थित करने के तरीके के बारे में गीता पर विचार किया गया है। यह पुस्तक गीता के मुख्य संदेश को ध्यान में रखती है कि ध्यान और आध्यात्मिक विषयों के अभ्यास के माध्यम से हमारे संघर्ष को कैसे हल किया जाए और जीवन की गहरी एकता के अनुरूप रहे।

10. क्रिस्टोफर ईशवरवुड[73]

क्रिस्टोफर ईश्वरवुड एक अंग्रेजी उपन्यासकार, नाटककार और लेखक था। 1925 में क्रैम्बिज यूनिवर्सिटी छोड़ने के वाद इन्होंने अपने स्कूल के दोस्त डब्ल्यू ड्यूडन के साथ (1907-1973) यूरोप और फिर चीन (1938) में यात्रा की।

ईश्वरवुड और ड्यूडन ने इग्लैण्ड में वामपंथी साहित्य के तीसवी पीढ़ी के शुरूआती कोर का गठन किया।

जनवरी 1939 में आडन और ईश्वरवुड ने एडक्स हक्सले से मित्रता किया जिसके साथ उन्होंने कभी-कभी सहयोग किया। ये हक्सले के माध्यम से दक्षिणी कैलिफोर्निया के वेदान्त सोसायटी के प्रमुख स्वामी प्रभवानन्द के सम्पर्क में आये और उनके शिष्य बन गये। स्वामी प्रभवानन्द के साथ मिलकर इश्वरवुड ने भगवद्गीता का एक नया अंग्रेजी अनुवाद किया जिसे 1944 में प्रकाशित किया गया। ईश्वरवुड पूरी तरह से भिक्षु नहीं वन पाये किन्तु फिर भी प्रत्येक सप्ताह मंदिर में अपने जीवन के बाकी हिस्सों में ध्यान करने, प्रार्थना करने और व्याख्यान करने के लिए हिन्दू बना और कई साहित्यिक काम भी किया जिसमें जीवनी के रूप में Ramkrishna & His Disciples 1965 में लिखा। अपनी अन्तिम पुस्तक "My Guru & His Disciple" 1980 में अपने हिन्दू धर्म के परिवर्तन स्वामी प्रभवानंद के मार्गदर्शन को अंकित किया है।

73. https://sreenivasaravs.com/Tag/Translation of the gita-into-european-Language.

Scanned with CamScanner